#२५: सत्यता-१ : सहअस्तित्व

दिनांक -१७/१०/२०११

मूल रूप में अथवा नित्य रूप में परम सत्य अपने स्वरूप में सहअस्तित्व ही है | सहअस्तित्व अपने में सत्तामयता में सम्पृक्तप्र कृति है | प्रकृति दो स्वरूप में गण्य है, जड़ और चैतन्य | चैतन्य प्रकृति में से चार चेतनाएं अथवा चार प्रकार से चेतनाएं प्रकट रहना पाया जाता है | यह मानव परम्परा में ही प्रमाणित होता है | पहला जीव चेतना, दूसरा मानव चेतना, तीसरा देव चेतना, चौथा दिव्य चेतना | इन चार प्रकार से चेतना प्रकट होना, प्रमाणित होना, परम्परा होना ही सपूर्ण अस्तित्व है | इस प्रकार से अस्तित्व का मूल स्वरूप सह-अस्तित्व रूप में पाया जाता है | सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होने से ही चार अवस्थाएं स्पष्ट हुई हैं | सह- अस्तित्व ही चार प्रकार से चेतना को प्रकट करने की स्थिति में ज्ञानावस्था प्रकट हुआ है | ज्ञानावस्था में मानव ही गण्य है | सर्वमानव ज्ञानावस्था में ही है | ज्ञानावस्था का मतलब ही है चेतना चतुष्टय स्पष्ट होना | अभी तक मानव जात आबाल वृद्ध अवस्था में जीव चेतना में जीता हुआ मिलता है | जीव चेतना विधि से मानव जंगल युग से ही जीना सीखा है | यह स्वयंस्फूर्त है | इसके लिये सहायक चारों अवस्था रहा अर्थात मानवेत्तर तीनों अवस्थाएं समीचीन रहा | इस क्रम में मानव धरती पर ही रहा, जंगल झाड़ी के साथ ही रहा, जीवों के साथ विशेष रूप से संघर्ष करता रहा | इस क्रम में मानव जीव चेतना में जीने का बाध्यता को स्वीकारा जबकि सन २००० तक जीव भय से मुक्ति, प्राकृतिक भय से भी मुक्ति पाने का प्रयास रहा है | इसी अवधि तक मानव में ही भय का आधार स्थापित हो गया |

अनेक मत, संप्रदाय, वर्ग, भाषा, देश, जाति आदि में बंट गए | यही समुदाय चेतना के रूप में परिवर्तित हो गए | हर समुदाय अपने श्रेष्ठता को प्रस्तुत करने के लिये प्रयत्नशील है | इसमें से ध्यान देने की बात एक ही है कि कोई भी समुदाय, सभी समुदायों के लिये स्वीकार नहीं हो पाया | कोई समुदाय मृदुलता के साथ बैर विरोध को बजाया, कोई समुदाय बर्बरता के साथ बैर विरोध को भंजाया, यही कहा जा सकता है | यह इतिहास के आधार पर आंकलित होता है | इन घटनाओं के साथ जीता हुआ मानव जात संघर्ष और सामरिक मानसिकता में परिवर्तित हुआ | आज की स्थिति में सभी समुदाय जहाँ जहाँ निवास करता है, उसी भूखण्ड के सभी ओर सीमा सुरक्षा का स्वरूप बन बैठा है | यही सामरिकतंत्र के लिये उद्यतहोने का स्पष्ट झांकी है | इसे इतिहास के अनुसार यदि सोचा जाय तो लाठी से, पत्थर से, मानव-मानव के साथ शुरूआती संघर्ष किया | यह नस्ल और रंग के आधार पर रहा है | यही क्रमागत विधि से बन्दूक, बारूद, तोप, मिसाइल के रूप में परिवर्तित होता रहा है | इन साधनों का प्रदर्शन के मूल में बैर, विरोध रुपी अपराध प्रवृत्ति ही रही है | अपराध के प्रदर्शन को रोकने की प्रवृत्ति स्वयं अपराध प्रवृत्ति में परिवर्तित होना, पुनः उसे रोकने की प्रवृत्ति अपराधिक होना हुआ | इस प्रकार मानव जात सभी अपराध को वैध मानने के लिये प्रवृत्त हुआ | आज के स्वरूप में ऐसा झांकी सजी हुई है |

इसे हर देशवासी परिशीलन कर सकता है | इस बीच सन २००० से विकल्पात्मक प्रस्ताव अर्थात चेतना विकास मूल्य शिक्षा रुपी प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ है जिसके मूल में सह-अस्तित्ववादी चिंतन ही रहा | यह साधना, अभ्यास, ध्यान, समाधि, संयम से समझा हुआ ज्ञान रहा | परम्परागत विधि से सह-अस्तित्व का जिक्र नहीं है | सह-अस्तित्व का कहीं भी जिक्र है, वह लड़ने,झगड़ने का है, या छोड़ने – संबंधों को नकारने का है; न कि साथ-साथ जीने का | यह सब तथ्यों को समझने के पश्चात ही

हम मानव जात ज्ञानावस्था में सुधार के लिये जीने की स्वीकृति के साथ तत्पर हो पाते हैं| सुधार केवल चेतना विकास मूल्य शिक्षा विधि से सम्भव होना देखा गया है| चेतना, समझदारी के रूप में मानव परम्परा में निरंतर स्पष्ट होना सहज है| इसी आशय के आधार पर चेतना विकास सार्थक होने की आशा, अपेक्षा, आवश्यकता बन चुकी है| क्योंकि धरती बीमार होने से, प्रदूषण छा जाने से, मानव में अपराध प्रवृत्तियां मजबूत होने से इसकी आवश्यकता प्रकट हो चुकी है| आवश्यकता के अनुरूप पारंगत, प्रमाण होना शेष है| इसके लिये प्रस्ताव भौतिकवाद और आदर्शवाद के विकल्प में सह-अस्तित्ववादी विधि प्रस्तुत होचुकी है| आदर्शवाद रहस्य में फंसने के कारण उदासीनता के योग्य हो गया, जबकि भौतिकवाद सुविधा- संग्रह में फंसने से अपराध प्रवृत्तियां और ज्यादा मजबूत होगईं| इन सभी विश्लेषणसे यही उजागर होता है कि मानव में प्राकृतिक रूप में ही स्वयंस्फूर्त विधि से यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को स्वीकारने का अधिकार बना है| यह बच्चों से बूढों तक सर्वेक्षणपूर्वक देखने को मिलता है| अपेक्षा सभीपन की है| प्रयास इसके विपरीत है| इसी का नाम भ्रम है| भ्रममुक्ति, अपराधमुक्ति तभी सम्भव है जब यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता को हृदयंगम कर सकें, समझ सकें और प्रमाणित कर सकें| ऐसी घटना शिक्षा विधि से ही सम्भव है|

सम्पूर्ण मानव शिक्षित होने का पूर्व भूमि साधन रूप में सर्व देशकालीय मानव में, से, के लिये सुलभ हो चुका है| इसका उपयोग, सदुपयोग होना स्वाभाविक है| यही दूसरी भाषा से अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूप प्रयोजित होने से है| इसके मूल में हर व्यक्ति समझदार होने(शिक्षा विधि से) और परिवार रूप में समाधान, समृद्धि रूप में जीने के पश्चात ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था होना सम्भव है| इस क्रम में अखण्ड राष्ट्र के रूप में पूरा धरती का होना स्वीकार होता है| फलस्वरूप समझदारी के आधार पर अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था १० सोपानीय विधि से सम्पन्न होता है| अखण्ड समाज का स्वरूप समाधान, समृद्धि सम्पन्न परिवार में ही प्रकट होता है|

संपूर्ण समृद्धि उत्सव के रूप में प्रमाणित होता है| संपूर्ण उत्सव जन्मदिन उत्सव, नामकरण उत्सव, विद्यारंभ उत्सव, दीक्षांत समारोह उत्सव, विवाह उत्सव, ऋतुकाल उत्सव, व्यवस्था संबंधी पाँच आयाम उत्सव, १० सोपानीय उत्सव- ये स्वाभाविक रूप में होता है| समझदार मानव परम्परा में इसके लिए अलग से प्रयत्न करना नहीं होता है| इसी में न्याय सुलभता, उत्पादन सुलभता, शिक्षा संस्कार सुलभता, विनिमय सुलभता, स्वास्थ्य संयम सुलभता सर्वमानव के लिये स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार रूप में सुलभ होता है| यही मानव का चिरापेक्षा है| इसके लिये विकल्पात्मक प्रस्ताव प्रस्तुत है| इसे परिशीलन किया जा सकता है| इसी से मानव परम्परा अपराधमुक्त, भ्रममुक्त होना समीचीन है अथवा स्वाभाविक है| सर्व शुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत